DAINIK TRIBUNE 13 APR 2008

पेट खाली तो एक समस्या, भरा तो अनेक : सद्गुरु जग्गी

चंडीगढ़, 12 अप्रैल (सांप्र)। ईशा फाउंडेशन कोयंबटूर के संस्थापक योगी, विचारक सद्गुरु जग्गी वासुदेवा ने आज पंजाब विश्वविद्यालय के लॉ आडिटोरियम में इनर इंजीनियरिंग-'कुशलता का शिखर' विषय पर अपने बहुमूल्य विचार रखे। कार्यक्रम का आयोजन पंजाब स्टेट आईएएस आफिसर्ज एसोसिएशन द्वारा किया गया था। गणमान्य लोगों को संबोधित करते हुए सद्गुरु ने कहा कि इस बात का कोई पुख्ता रास्ता नहीं है कि भगवान कहां है। भगवान सृजनकर्ता है और जो कुछ उसने सृजित किया है वही हमारे अंदर है। अपने अंदर को समझना ही खुशी व संतुष्टि को पाना है। जानवरों की केवल एक समस्या है पेट भरना। एक बार उनका पेट भर गया तो वह संतुष्ट हो जाते हैं फिर न कोई संघर्ष न झगड़ा। परंतु इनसान का यदि पेट खाली हो तो केवल एक समस्या है और यदि पेट भर जाये तो समस्याएं ही समस्याएं हैं।

उन्होंने कहा कि मनुष्य की इच्छाएं ही सबसे बड़ी समस्या है। हर कोई चाहता है कि यदि उसे थोड़ा और मिल जाये तो वह संतुष्ट है लेकिन थोड़ा और की यह दौड़ कभी समाप्त नहीं होती। सद्गुरु ने कहा कि अकसर आपने लोगों से सुना होगा कि मेरी कोई इच्छा नहीं बस ईश्वर को पाना चाहता हूं। ईश्वर को पाने की इच्छा क्या कम इच्छा है। यह तो संसार की सारी इच्छाओं से बड़ी है।

उन्होंने बताया कि जितनी सुख-सुविधा में हम आज जी रहे हैं वह शायद पिछले हजार साल में भी नहीं हो। परंतु जितनी सुविधाएं हमें मिल रही हैं व्यक्ति उतना ही दुखी व असंतुष्ट है।

उन्होंने कहा कि ईश्वर ने जो सृजित किया है वही शक्ति है। यदि हम देखने, स्पर्श करने, सूंघने, बोलने व सुनने की शक्ति वाले इन पांच तत्वों को बंद कर दें तो बाहर कुछ भी नहीं है। आप जैसा चाहते हैं आपके अंदर वही घटता है। जैसा आप चाहते हैं वह नहीं होता तो प्रकृति की शरण में जाओ वहीं खुशी व संतुष्टि है। योग एकमात्र संतुष्टि का साधन है। योग का मतलब यूनियन यानी मिलाना है। इसकी एक ही शक्ति है वो आपके भीतर है। कोई बाहरी शक्ति आपके जीवन का प्रबंधन नहीं कर सकती, अपने जीवन का प्रबंधन आपको स्वयं करना होगा।

प्रभु प्राप्ति से आते हैं दैवीय गुण : सत्यार्थी

चंडीगढ़, 12 अप्रैल (सांप्र)। प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि जीवन में उसकी पहचान बने। इसके लिए वह यथायोग्य प्रयास भी करता है, परंतु वास्तव में उसकी पहचान तभी बनती है जब वह प्रभु-प्राप्ति द्वारा अपनी पहचान कर लेता है। अर्थात प्रभु प्राप्ति से मनुष्य में दैवीय गुण प्रवेश कर जाते हैं जिससे उसके मन में शुद्धता, वाणी में मिठास और कर्मों में पवित्रता आ जाती है। ये भाव संत निरंकारी मिशन के विद्वान व मंडल के प्रधान जेआरडी सत्यार्थी जी ने आज संत निरंकारी सत्संग भवन, सेक्टर 30-ए, चंडीगढ़ में एक विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए प्रकट किये। यह सत्संग निरंकारी मिशन के एक परोपकारी संत श्री मंगाराम जी निवासी सेक्टर 15-डी चंडीगढ़ के ब्रह्मलीन होने पर रखा गया था, जिसमें उनके दैवी गुणों एवं परोपकारी कार्यों का जिक्र किया गया।

श्री सत्यार्थी जी ने फरमाया कि जो भी पहचान श्री मंगाराम जी की बनी है उसका राज उन द्वारा प्राप्त किया गया ब्रह्मज्ञान ही है। इस अवसर पर केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री श्री पवन कुमार बंसल जी भी उपस्थित थे।